सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुद्दस्सिर

चादर ओढ़े हुए

पूरा सफ़र — वो दिन जब मिशन शुरू हुआ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 74 • 56 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहल्-मुद्दस्सिर। क़ुम फ़-अन्ज़िर
1-2. ऐ चादर ओढ़ने वाले! उठो और डराओ।

व रब्बक फ़-कब्बिर
3. और अपने रब ही की बड़ाई बयान करो।

व ला तम्नुन तस्तक्सिर
6. और एहसान जता कर ज़्यादा पाने की ख़्वाहिश मत करो।

व लि-रब्बिक फ़स्बिर
7. और अपने रब के लिए सब्र करो।

कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा कसबत रहीनह
38. हर नफ़्स अपनी कमाई के बदले गिरवी है।

हुव अह्लुत्-तक़्वा व अह्लुल्-मग़्फ़िरह
56. वही इस लायक़ हैं कि उनसे डरा जाए, और इस लायक़ कि माफ़ करें।

मुझे ढाँप दो!

बेटा, यह सूरह एक ऐसे लम्हे पर शुरू होती है जिसने इंसानी तारीख़ का रुख़ बदल दिया — और ये एक ऐसे शख़्स से शुरू होती है जो एक कंबल के नीचे काँप रहा है।

ग़ार-ए-हिरा में पहली वही के बाद एक वक़्फ़ा आया — एक ऐसा अरसा जिसमें कोई वही नाज़िल न हुई। फिर एक दिन, जैसा आप ﷺ ने ख़ुद बयान फ़रमाया, आप चल रहे थे कि आपने आसमान से एक आवाज़ सुनी। आपने सर उठाया — और वही फ़रिश्ता जो हिरा में आया था, आसमान और ज़मीन के दरमियान एक तख़्त पर बैठा था, उफ़क़ को भरता हुआ।

आप ﷺ पर एक रोब तारी हो गया और आप जल्दी से घर तशरीफ़ लाए, ये कहते हुए: 'ज़म्मिलूनी! दस्सिरूनी!' — मुझे ढाँप दो! मुझे लपेट दो! उन्होंने आपको एक चादर में लपेट दिया।

और उसी चादर के नीचे, आसमान ने आपको दोबारा पुकारा: 'या अय्युहल्-मुद्दस्सिर — ऐ चादर ओढ़ने वाले — क़ुम फ़-अन्ज़िर — उठो और डराओ!'

बेटा, इन दो सूरहों में फ़र्क़ महसूस कीजिए। अल-मुज़्ज़म्मिल में, लिपटे हुए को कहा गया: रात को खड़े हो — वो तर्बियत थी। यहाँ, चादर ओढ़ने वाले को कहा गया: उठो और डराओ — ये तैनाती है। पहले अल्लाह के साथ तन्हाई की रातें; फिर इंसानियत के सामने सर-ए-आम मिशन। ये तरतीब कभी नहीं बदलती, बेटा: जो लोगों की ख़िदमत करना चाहता है, उसे पहले तन्हाई में बनाया जाना ज़रूरी है।

पाँच हुक्म जो एक अलम-बरदार बनाते हैं

और 'उठो और डराओ' के साथ चार और हुक्म आए — कुल मिला कर पाँच — और ये मिल कर उस हर शख़्स का दस्तूर बन जाते हैं जो अल्लाह के लिए कोई पैग़ाम उठाता है:

'व रब्बक फ़-कब्बिर — और अपने रब ही की बड़ाई बयान करो!' बेटा, अरबी की तरतीब ग़ौर कीजिए: 'अपने रब' पहले आता है — यानी सिर्फ़ वही, कोई और नहीं। ये किसी दावत देने वाले की पहली शर्त है: जब आप बोलने को खड़े हों, तो उसी की बड़ाई करो, अपनी नहीं। जिस लम्हे किसी दाई के दिल में उसका अपना नाम बड़ा होने लगे, उसका पैग़ाम छोटा हो जाता है।

'व सियाबक फ़-तह्हिर — और अपने कपड़े पाक रखो!' उलमा इसकी दो सतहों पर तफ़्सीर करते हैं: लफ़्ज़ी तौर पर, अपने कपड़े साफ़ रखो — इस दीन का पैग़ंबर कभी लोगों के सामने मैला या लापरवाह नज़र नहीं आना था; और मा'नवी तौर पर, अपने 'लिबास' यानी अख़लाक़ और नीयत को पाक रखो, क्योंकि अरब आदमी के किरदार को उसका लिबास कहते थे।

'वर्-रुज्ज़ फ़ह्जुर — और गंदगी को छोड़ दो!' रुज्ज़, अपने पहले माने में, बुत थे और वो सब कुछ जो उनसे जुड़ा था — और इस से आगे हर अक़ीदे और अमल की ना-पाकी। कोई शख़्स पाकी की तरफ़ नहीं बुला सकता जब उसके अपने हाथ में गंदगी हो।

'व ला तम्नुन तस्तक्सिर — और एहसान जता कर ज़्यादा पाने की ख़्वाहिश मत करो।' बेटा, ये एक नाज़ुक और ख़ूबसूरत हुक्म है। एहसानात को सरमाया-कारी की तरह मत कीजिए। पाने के लिए मत दीजिए। किसी की मदद कर के फिर उसे जताइए मत, न बदले का इंतिज़ार कीजिए। अल्लाह के लिए दीजिए, और हिसाब भूल जाइए — वो रखते हैं।

'व लि-रब्बिक फ़स्बिर — और अपने रब के लिए सब्र करो।' ग़ुरूर के लिए सब्र नहीं, मज़बूत दिखने के लिए सब्र नहीं, इस लिए सब्र नहीं कि कोई चारा नहीं — बल्कि उस के लिए सब्र। बेटा, वो छोटा सा लफ़्ज़ 'लि-रब्बिक' बर्दाश्त को इबादत में बदल देता है।

पाँच मुख़्तसर हुक्म, और हर एक अलम-बरदार के बारे में है, पैग़ाम के बारे में नहीं। अल्लाह ने मिशन छेड़ने से पहले अलम-बरदार को बनाया — और हमें बता रहे हैं: अगर आप लोगों को भलाई की तरफ़ बुलाना चाहते हैं, तो पहले ख़ुद पर काम कीजिए।

वो आदमी जो जानता था — और झूट बोला

फिर सूरह अपना लेंस एक शख़्स पर मोड़ देती है, और हमें क़ुरआन की सबसे तफ़्सीली नफ़्सियाती तस्वीर देती है कि एक इंसान उस सच को कैसे रद्द करता है जिसे वो जानता है कि सच है।

अल-वलीद इब्ने अल-मुग़ीरा मक्का का सबसे अमीर और सबसे मोअज़्ज़ज़ सरदार था — 'और मैंने उसे बे-इंतिहा माल दिया, और उसके सामने मौजूद बेटे' — एक ऐसा शख़्स जिसके पास सब कुछ था, और फिर भी 'वो चाहता है कि मैं और बढ़ाऊँ।'

वो अरब का सबसे बेहतरीन ज़ुबान-शनास भी था। तो जब क़ुरैश को हज के मौसम से पहले इस क़ुरआन को कोई नाम देना था, वो उसके पास आए। और उसने पहले ईमानदारी से बात की, अपनी ही क़ौम के सामने वो मान लिया जो उसके माहिर कान ने सुना था: अल्लाह की क़सम, तुम में से कोई शेर मुझ से बेहतर नहीं जानता — और ये किसी इंसान का कलाम नहीं; इसमें एक मिठास है और उस पर एक रौनक़; इसका ऊँचा हिस्सा फलदार है और इसका नीचा हिस्सा उबलता हुआ; ये बुलंद होता है और

इस से बुलंद कुछ नहीं होता।

बेटा, ये एक ऐसा आदमी है जो सच के आमने-सामने खड़ा है। और फिर दबाव आया: सरदारों ने उसे कहा — अगर तुम ये कहोगे, तो तुम्हारी क़ौम कहेगी कि तुमने उसका दीन क़ुबूल कर लिया; कुछ ऐसा कहो जिसे वो दोहरा सकें।

और अब देखिए, बेटा, क़ुरआन उसके अंदर जो हुआ उसे कैसे फ़िल्म-बंद करता है — छह मरहले, तरतीब से: 'इन्नहू फ़क्कर व क़द्दर — बेशक उसने सोचा और मंसूबा बनाया। फ़-क़ुतिल कैफ़ क़द्दर — तो वो हलाक हो, कैसे उसने मंसूबा बनाया! सुम्म क़ुतिल कैफ़ क़द्दर — फिर वो हलाक हो! सुम्म नज़र — फिर उसने देखा। सुम्म 'अबस व बसर — फिर उसने त्योरी चढ़ाया और घूरा। सुम्म अद्बर वस्तक्बर — फिर उसने पीठ फेरी और तकब्बुर किया। फ़-क़ाल इन हाज़ा इल्ला सिहुंय्-यु'सर — और उसने कहा: ये तो बस एक नक़ल किया हुआ जादू है — इन हाज़ा इल्ला क़ौलुल्-बशर — ये तो बस एक इंसान का कलाम है।'

बेटा, उन मराहिल को दोबारा पढ़िए — सोचना, हिसाब लगाना, त्योरी, घूरना, तकब्बुर से मुँह फेरना — और फिर वो जुमला जिसने उसके अपने इल्म का भांडा फोड़ दिया। ये तब होता है जब कोई इंसान अपने रुतबे को सच पर तरजीह देता है।

और अल्लाह का फ़ैसला: 'स-उस्लीहि सक़र — मैं उसे सक़र में डालूँगा। ला तुब्क़ी व ला तज़र — न कुछ बाक़ी छोड़ती है न छोड़ती है — लव्वाहतुल्-लिल्-बशर — इंसान की खाल झुलसाती हुई।'

और बेटा, ये होला देने वाला तंज़ देखिए: जिस आदमी ने कहा ये 'क़ौलुल-बशर' है — इंसान का कलाम — उसे एक ऐसी आग सज़ा देती है जिसे 'लव्वाहतुन लिल-बशर' — इंसान को झुलसाने वाली — कहा गया।

उन्नीस — और इम्तिहान के अंदर इम्तिहान

फिर अल्लाह फ़रमाते हैं: "अलैहा तिस'अत 'अशर — उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते) हैं।'

बेटा, ये छोटी सी तफ़्सील ख़ुद एक इम्तिहान बन गई। मक्का के मज़ाक़ उड़ाने वाले

हँसे: सिर्फ़ उन्नीस? एक रिवायत में आता है कि एक ताक़तवर आदमी ने फ़ख़्र किया कि वो अकेला सत्रह से निबट लेगा। और अल्लाह ने उनके मज़ाक़ का जवाब एक ऐसी आयत में दिया जो ख़ुद एक सबक़ है: 'व मा ज'अल्ना अस्हाबन्-नारि इल्ला मलाइकह — और हमने आग के निगहबान सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए' — इंसान नहीं, जिनकी ताक़त नापी जा सकती है — 'व मा ज'अल्ना 'इद्दतहुम इल्ला फ़ितनतल्-लिल्लज़ीन कफ़रू — और हमने उनकी तादाद सिर्फ़ मुनकिरों के लिए एक आज़माइश बनाई।'

और फिर अल्लाह उस एक अदद के मक़ासिद गिनवाते हैं: ताकि अहल-ए-किताब यक़ीन कर लें, और ईमान वाले ईमान में बढ़ें, और ताकि अहल-ए-किताब और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिनके दिलों में बीमारी है और मुनकिर कहें: अल्लाह इस मिसाल से क्या इरादा रखते हैं?

बेटा, ये क़ुरआन के सबसे अहम सबक़ों में से एक है कि लोग एक ही मालूमात को कैसे क़ुबूल करते हैं: वही हक़ीक़त — एक अदद — मोमिनीन के ईमान को बढ़ा गई और बीमार दिलों के मज़ाक़ को बढ़ा गई। आयत नहीं बदलती; उसे क़ुबूल करने वाला दिल सब कुछ बदल देता है।

'और आपके रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता। व मा हिय इल्ला ज़िक्रा लिल्-बशर — और ये इंसानियत के लिए एक नसीहत के सिवा कुछ नहीं।'

तुम्हें सक़र में किस चीज़ ने डाला?

और अब, बेटा, वो हिस्सा आता है जिसे हर मुसलमान को एक चेकलिस्ट की तरह रखना चाहिए — क्योंकि अल्लाह हमें आग वालों को उनकी अपनी तबाही के बारे में एक सीधे सवाल का जवाब देते सुनवाते हैं।

'कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा कसबत रहीनह — हर नफ़्स अपनी कमाई के बदले गिरवी है — इल्ला अस्हाबल्-यमीन — सिवाए दाएँ हाथ वालों के।' बेटा, तस्वीर समझिए: हर नफ़्स एक गिरवी रखी हुई चीज़ की तरह है — रोक ली गई, हिलने से क़ासिर — जब तक उसका क़र्ज़ न चुका दिया जाए। दाएँ हाथ वालों ने अपना (नफ़्स) छुड़ा लिया।

वो बाग़ों में होंगे, एक दूसरे से पूछते हुए — और मुजरिमों से पूछते हुए: 'मा सलककुम फ़ी सक़र — तुम्हें सक़र में किस चीज़ ने डाला?'

और ये रहा उनका जवाब, बेटा, चार लाइन में। इन्हें एक ख़ुद-जाँच के तौर पर याद कर लीजिए:

एक: 'क़ालू लम नकु मिनल्-मुसल्लीन — वो कहेंगे: हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे।' नमाज़ का ज़िक्र पहले — हमेशा पहले।

दो: 'व लम नकु नुत्'इमुल्-मिस्कीन — और हम मिस्कीन को खिलाते न थे।' बेटा, फिर वही जोड़ी: छूटी हुई नमाज़ और बंद मुट्ठी।

तीन: 'व कुन्ना नख़ूज़ु म'अल्-ख़ाइज़ीन — और हम फ़ुज़ूल बातों में पड़ने वालों के साथ पड़ते थे।' ये नहीं कि उन्होंने क़त्ल या चोरी की — उन्होंने बातचीत की। वो उन महफ़िलों में बैठे जहाँ दीन का मज़ाक़ उड़ाया जाता था, लोगों की इज़्ज़त को चबा जाया जाता था — और वो शामिल हो गए, या कम अज़ कम वहीं रुक कर लुत्फ़ लेते रहे। बेटा, ये अकेली आयत हमें अपनी सोहबत, अपने ग्रुप चैट्स, अपनी टाइमलाइन्स का जायज़ा लेने पर मजबूर कर देनी चाहिए।

चार: 'व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बि-यौमिद्-दीन — और हम बदले के दिन को झुठलाते थे — हत्ता अतानल्-यक़ीन — यहाँ तक कि हमारे पास यक़ीन आ गया' — यानी मौत।

और फिर वो आयत: 'फ़-मा तन्फ़'उहुम शफ़ा'अतुश्-शाफ़ि'ईन — तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन्हें फ़ायदा न देगी।' उलमा निशानदेही करते हैं कि इसका मतलब है: शफ़ाअत हक़ है, और वो दूसरों को फ़ायदा देगी — मगर उन को नहीं जो झुठलाते हुए मर गए। नमाज़, मिस्कीन को खिलाना, अपनी सोहबत की हिफ़ाज़त, और दिन का यक़ीन — यही चार ढालें हैं।

भड़के हुए गधे

फिर सूरह इंसानी रवैये के बारे में एक ऐसा सवाल पूछती है जो हर साल और ज़्यादा बर-महल होता जाता है: 'फ़-मा लहुम 'अनित्-तज़्किरति मु'रिज़ीन — उन्हें क्या हो

गया कि नसीहत से मुँह फेर रहे हैं — क-अन्नहुम हुमुरुम्-मुस्तन्फ़िरह — गोया वो भड़के हुए गधे हों — फ़र्रत मिन क़स्वरह — जो शेर से भाग रहे हों?'

बेटा, वो मंज़र तसव्वुर कीजिए जो क़ुरआन खींचता है: जंगली गधे सुकून से चर रहे हैं, और अचानक एक शेर ज़ाहिर होता है — और वो अंधी घबराहट में हर सिम्त बिखर जाते हैं। और अल्लाह फ़रमाते हैं: लोग अल्लाह की नसीहत से ठीक इसी तरह भागते हैं।

मगर इस तशबीह के बारे में सोचिए, बेटा — ये तबाह कुन है। गधे उस चीज़ से भागते हैं जो उन्हें वाक़ई खा जाती। ये लोग किस से भाग रहे हैं? एक ऐसी नसीहत से जो उन्हें **बचा** लेती। नसीहत रहमत के साथ हमारा पीछा करती है, और ग़ाफ़िल अपने ही इलाज से भागते हैं।

बेटा, इस आईने में अपने आप को ईमानदारी से देखिए: वो रील जो एक आयत आते ही स्क्रॉल कर दी गई; वो नसीहत जो 'पता है, पता है' कह कर काट दी गई; वो दोस्त जिसे इसलिए टाला जाता है कि वो दीन की बात करता है।

और उनका मुतकब्बिर मुतालबा: 'बल युरीदु कुल्लुम्-रि-इम्-मिन्हुम अंय्-यु'ता सुहुफ़म्-मुनश्शरह — बल्कि उन में से हर एक चाहता है कि उसे खुले हुए सहीफ़े दिए जाएँ।' 'कल्ला — हरगिज़ नहीं! बल ला यख़ाफ़ूनल्-आख़िरह — बल्कि वो आख़िरत से डरते ही नहीं।' बेटा, यही असल तशख़ीस है: बात कभी ना-काफ़ी दलील की थी ही नहीं; बात ख़ौफ़ की ग़ैर-मौजूदगी की थी।

और सूरह तीन जुमलों पर ख़त्म होती है: 'कल्ला इन्नहू तज़्किरह — हरगिज़ नहीं! बेशक ये एक नसीहत है — फ़-मन शा-अ ज़करह — तो जो चाहे इसे याद रखे। व मा यज़्कुरून इल्ला अंय्-यशा-अल्लाह — और वो याद नहीं रखेंगे मगर जो अल्लाह चाहें। हुव अह्लुत्-तक़्वा व अह्लुल्-मग़िफ़रह — वही इस लायक़ हैं कि उन से डरा जाए, और इस लायक़ कि माफ़ करें।'

बेटा, क्या इख़्तिताम है: सक़र और उसके उन्नीस के बाद, तबाही की चेकलिस्ट और भड़के हुए गधों के बाद — सूरह का आख़िरी लफ़्ज़ ये है कि अल्लाह 'अह्लुल-मग़िफ़रह'

हैं — वो ज़ात जो माफ़ करने की हक़दार है, जिनकी फ़ितरत माफ़ करना है। उन से डरिए — और जान लीजिए कि कोई उन जैसा माफ़ नहीं करता।

इस सूरह से क्या सीखा

1. आराम वहीं ख़त्म होता है जहाँ फ़र्ज़ पुकारता है: जब अल्लाह 'क़ुम' कहें, तो कंबल — सुस्ती का, ख़ौफ़ का, 'बाद में' का — उतारना ही होगा।

2. पैग़ाम से पहले अलम-बरदार को बनाइए: सिर्फ़ उसी की बड़ाई, कपड़े और किरदार साफ़, गंदगी छोड़िए, बग़ैर बदले की उम्मीद के दीजिए, और उस के लिए सब्र कीजिए।

3. अल-वलीद का गिरना सोहबत के दबाव की तस्वीर है — सच जानना बेकार है अगर रुतबा उस से ज़्यादा अहम हो।

4. वही मालूमात एक दिल में ईमान बढ़ाती है और दूसरे में मज़ाक़ — क़ुबूल करने वाले दिल की हालत की हिफ़ाज़त कीजिए।

5. सक़र के ख़िलाफ़ चार ढालें थाम लीजिए: नमाज़, मिस्कीन को खिलाना, फ़ुज़ूल और मज़ाक़ उड़ाने वाली सोहबत से बचना, और दिन का यक़ीन।

6. कभी वो गधा मत बनिए जो शेर से भागे: जिस नसीहत से आप भागते हैं वही रहमत के साथ आपका पीछा कर रही है।

7. वो 'अह्लुत-तक़्वा व अह्लुल-मग़्फ़िरह' हैं — उनके ख़ौफ़ को कभी उन से उम्मीद मार देने मत दीजिए।

या अल्लाह, जब आप पुकारें हमें उठने वाला बना दीजिए, हमारी सोहबत साफ़ रखिए, और हमें माफ़ फ़रमाइए — क्योंकि आप ही माफ़ करने के लायक़ हैं। आमीन।